

यह, 1949, बम्बई आर्ट सोसायटी की गोलन जुबली का समय था, हम पहले बार मिले। पलसोकर ने एक पेंटिंग भेजने के लिए मुझे भेजे एक कम्परे बाले फिरोज के मकान में मुझे मिलने आया जो महल कहे जाने वाली एक भोली देमास में सबसे ऊपर लिया गया। वहाँ विष्णुकला के संबंध में काफी बर्बाद हुई। वह विकलता और आवेश में बोलता रहा। उसने अपनी एकमात्र से मुझे प्रभावित किया। मैं और भी अधिक प्रभावित हुआ क्योंकि मैं एक दोहरी छिन्नी भी रहा था और एक हलके, पर निर्भर अपराध बोध से परिचित था। बम्बई उन दिनों बेहद सक्रिय जगह थी। कला में व्यवसायिकता का आघात हो कोई स्थान था बल्कि बावर्षी और बहसों का हो बर्बाद था। हम नई-नई खोजों से फटने वाली जवानों के जोश और विस्वास से भरे हुए थे। हम पिछिम की सड़क पर थे और खोजना बहुत कुछ था। कोई भी पहचान के (व्यक्तिगत या राष्ट्रीय) संकेत से भूल नहीं था। यह एक अच्छी कला की तलाश थी, चाहे वह जहाँ कहीं भी थी। और यही वह तलाश थी जो पहले रक्षा और पदमली को यूरोप तक खींच ले गयी।

मैं 1954 की गिरफ्तारी में प्रिय गया। रक्षा की फ्रेव सरकार की स्काउटिंग उसी समय खत्म हुई थी। उसने फिनिश एवाइ थी पाया था और उसकी कलाकृतियाँ ने कुछ आलोचनात्मक ध्यान भी आकृष्ट किया था लेकिन उसे अपना एक स्थान बनाने के लिए बहुत दूरी तय करनी थी। मुझे याद है वहाँ रुकने और काम करने का उसका कठोर निश्चय जीवन-यापन को बेहद मुश्किल और अनिश्चित बना रहा था। वह हिन्दी पढ़ाकर थोड़ा-बहुत पढ़ा पा रहा था और एक प्रकाशक मित्र ने उसे ऑस्टिन काईस बनाने एवं किताबों की सजावट के छोटे-मोटे अनवस्थ दे रखे थे। यह एक ठुल्ले जीवन था और आनेवाला जाड़ा अपनी पत्रिका लिख था। और उसकी एकमात्र सुरक्षा एक पुराना और कोट था और वह लगातार सारा पुराना खरीदने में खर्च करती था ... "यही तो है जो असल में आपकी गम रखता है और बीमार होना, मैं गबारा नहीं कर सकता।"

उसने यह पार किया और प्रिय के दृश्य का एक हिस्सा बना हालाँकि वह अपने देश की यादों में जीता और सँवरता रहा। जैसे-जैसे समय गजुरता है एक स्व-निर्वासित की समित विरहपूर्ण और रोमांटिक हो जाती है। वह रोजमर्रा की उन मनीष्यवाधियों और कष्टों से अछूती होती है जो रोमांटिक कल्पनाओं की विकृत करती है। उसके विभाग के काम में बन्द गाली भी और भीतर तक पहुँच कल्पना हिन्दुस्तानी सीत की लाल लोहिक और पदाकदा भारतीय भोजन से परिचित होती रही। उसे यह जानने की उत्सुकता रहती थी कि उसके मित्र कर क्या रहे हैं और देश में कला की हालत क्या है। वह उन बहुत थोड़े से लोगों में एक था—यहाँ तक कि आज भी है—जो पेंटिंग को बेहद वस्तुपरक ढंग से और पटर के प्रति खूद के आग्रह से अपने निर्वास को प्रभावित न होने देते हुए देख सकते हैं। उसका उत्साह संक्रामक है। मुझे याद था रहा है कि तब तब उसने मुझे लूब से परिचित करवाया। उसने मुझे आखिरी बद करने की कहा और बहुत से गलियारी से ले जाकर एक एकांत कमरे में रोका और कहा "शुब देखो"। वहाँ मेरे सामने एजिप्ट के एक अनाम कलाकार द्वारा चित्रित **पुष्पा** थी। पेंटिंग तो खोस नहीं है पर जिस तरह से रक्षा ने मुझे समझाया वह मेरे लिए रहस्योद्घाटन था। उस बिब की तीक्ष्णता अभी भी बाकी है।